उमाशंकर तिवारी

आईना चेहरे

चेहरा छोड़कर अपना
कभी घर से निकल जाता
मेरे सामने होते हजारों आईना चेहरे..
ठिठक कर भागते चेहरे
बगल से झांकते चेहरे

सफर के वक्त मेरे साथ मेरा घर नहीं होता
कभी शीशा चटखने का मुझको डर नहीं होता
सफर में सिर्फ चलती सांस जिन्दा पांव होते
कोई मंजिल, कोई मील का पत्थर नहीं होता

यही पैगाम लेकर जो
कभी घर से निकल जाता
मेरे सामने होते हजारों आईना चेहरे..
खुशी से झूमते चेहरे,
शिखर को चूमते चेहरे

हवाओं से, लहर के साथ अपनी दोस्ती होती,
कभी आंधी, तूफान से भी सामना होता
तभी तो जान पाता आदमी क्या चीज होता है
चाहे निष्क्रमण होता कि मेरा भागना होता

सुबह के वास्ते जो
शाम लेकर मैं निकल जाता
मेरे सामने होते हजारों आईना चेहरे
समुन्दर लांघते चेहरे
नया पुल बांधते चेहरे।

('नये–पुराने' गीत अंक–1, नवम्बर–1997 से साभार)

आवाज देकर देख लेते

मुझे आवाज देकर देख लेते..
तो समझ जाते कि सबका
राजदां हूं मैं

सभी की दास्तां हूं मैं,
सुहानी मंजिलों तक हम सफर हूं
रास्ता हूं मैं

गुजरती गाड़ियों की थरथरी महसूस करता हूं
सुरंगों की छतों को जोड़ता–सा झूलता पुल हूं
सुनहरी वादियों का सन्तरी हूं पासवां हूं मैं
कभी मादल, कभी गरबा, कभी सबरंग गोकुल हूं

मुझे आवाज देकर देख लेते..
तो समझ जाते कि सबका
राजदां हूं मैं

सभी की दास्तां हूं मैं,
सभी के साथ चलता हूं,
कि घर से लापता हूं मैं

मुझे बीमार शामो की उदारता छू नहीं पाती
घुटन से, शोर से, आतंक से गहरा अपरचिय है
हमारे पास आकर सभ्यतायें खिलखिलातीं हैं,
कई अनजान क्षितिजों की दिशायें ढूंढती लय है

मुझे आवाज देकर देख लेते..
तो समझ जाते कि सबका
राजदां हूं मैं

सभी की दास्तां हूं मैं
धनुष हूं सात रंगों का
गुजरता कारवां हूं मैं।